मूक बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन

विजेन्द्र मिश्रा
व्याख्याता, शिक्षा विभाग, विक्टोरिया कालेज ऑफ एज्युकेशन, भोपाल (मध्य प्रदेश) भारत

सारांश
शोध अध्ययन में मूक बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत विद्यालय सर्वेक्षण विधि को लिया गया है। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर के अशासकीय विद्यालय के मूक–बधिर 30 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। मूक–बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का मापन करने के लिये बेल द्वारा निर्मित समायोजन की मापनी श्रीमती ललीता शर्मा द्वारा भारतीय अनुकूलन का प्रयोग किया गया। मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

मुख्यबिन्दु :– मूक बधिर, बालक एवं समायोजन।

I प्रस्तावना

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का दृष्टिगत प्रभावी उपकरण है। अतः हमें साधारण रूप से विकलांग बच्चों को तो सामान्य कक्षाओं में एकीकृत करना ही है, साथ ही गहन रूप से विकलांग बच्चों को भी शिक्षा के सुविधा सुलभ कराने के उद्देश्य से विशेष शिक्षकों की सहायता से उन्हें सामान्य विद्यालयों में विशेष कक्षा प्रारम्भ कर वहाँ शिक्षा देना होगी। विकलांगता युक्त व्यक्तियों के संबंध में पारित अधिनियम 1996 के कारण सभी बच्चों को शिक्षा सुविधा देना अनिवार्य हो गया है।

सर्वेक्षणीय अनुमानों से पता चलता है कि हमारे देश में बधिर व्यक्तियों की संख्या लगभग 1 करोड़ 10 है जिनमें 49.86 लाख नेत्रहीन, 15 लाख नैत्रहीन, 15 लाख बधिर, 40 लाख विकलांग, 18 लाख मानसिक दृष्टि से विकृत एवं 40 लाख कुष्ठ द्वारा विकलांग सम्मिलित हैं।

भारत में भी शिक्षा संबंध राष्ट्रीय नीति संकल्प में यह सुझाव दिया गया है कि जहाँ तक संभव हो मूक–बधिर बच्चों को सामान्य स्कूलों में ही रखा जाना चाहिए। मूक–बधिर बच्चों के व्यक्तित्व का शिक्षा द्वारा इस प्रकार विकास किया जाए, जिससे उनमें आत्मग्लानि, नैराश्य, हीन–भावना और अपनी विकलांग स्थिति में भी जीवन जीने के लिये आकर्षण उत्पन्न हो सके।

श्रवण विकलांगता की अवधारणा के अन्तर्गत श्रवण बोध अथवा सुनने के दोष का अर्थ बालकों के कानों द्वारा सुनने से होनी वाली कठिनाईयों से है। विकलांग व्यक्ति अधिनियम (Person with disatities puld) 1995 के अनुसार श्रवण विकलांगता से अभिप्राय आवृति का परिवर्तित प्रसार बेहतर कार्य की तुलना में 60 डेसीबल तक कमी से है। इस विकार के कारण बच्चे को धीमी आवाज साधारण बातचीत, बहुत ऊँची आवाज आदि को सुनने में कठिनाई होती है। श्रवण विकलांगता दो प्रकार की हो सकती है– 1.) पूर्ण श्रवण विकलांगता 2.) आंशिक श्रवण विकलांगता।

पूर्ण श्रवण विकलांग बालकों की भाषा विकास पूर्णतः प्रभावित रहती है। आंशिक श्रवण विकलांग बालक किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण पूर्व भाषा काल में या उसके बाद ग्रसित हो सकते हैं। ऐसे बालक श्रवण यंत्र की सहायता से या बिना यंत्र के सुन सकने की क्षमता रहती है।

श्रवण विकलांगता जन्मजात या जन्म पश्चात् बधिरता हो सकती है। श्रवण विकलांगता के साथ ही वाक् क्षमता से प्रभावित बालक की प्रगति रूक जाती है। बधिरता के पश्चात् यदि एक विशेष समय तक बच्चे की समस्या पर विशेष ध्यान न दिया जाए तो आगे चल कर उसका वाक् एवं भाषा का विकास रूक सकता है।

इन बालकों में समायोजन द्वारा जीवन में यह अवसर प्रदान करना है कि वह भावी जीवन के लिए सही पथ का चयन कर सकें। वर्तमान समय में माता–पिता, बालक तथा समाज सभी समायोजन को महत्व देते हैं। प्रत्येक माता–पिता अपने बालकों को सक्षम बनाने हेतु उनके व्यवहारों को ध्यान में रखते हैं और उन्हें समायोजित होने में सहयोग प्रदान करते हैं ताकि समायोजन के साथ–साथ बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक प्रगति तथा शैक्षिक समस्याओं का निराकरण हो सकें।

II उद्देश्य

मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन।

III परिकल्पना

मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

IV शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन की शोध विधि विद्यालय सर्वेक्षण पर आधारित है, न्यादर्श हेतु भोपाल के मूक–बधिर विद्यालय का चयन किया गया जिसमें 30 बालकों को लिया गया है। बालकों के परीक्षण हेतु बेल द्वारा निर्मित समायोजन का श्रीमती ललीता शर्मा द्वारा किया गया परीक्षण।

भारतीय अनुकूलन का प्रयोग किया गया। इस अनुसूची में चार क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया–

(क) गृह समायोजन
(ख) स्वास्थ्य समायोजन
(ग) सामाजिक समयोजन
(घ) संवेगात्मक समायोजन

V सीमांकन

(क) प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु भोपाल नगर में स्थित मूक–बधिर विद्यालय में अध्ययनरत बालकों का चयन किया गया है।

(ख) मूक–बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन मापनी उपकरण द्वारा किया गया है।

(ग) समायोजन मापनी उपकरण द्वारा संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण T-test परीक्षण द्वारा किया जायेगा।

VI प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत विद्यालय सर्वेक्षण विधि को लिया गया है।

VII न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल शहर के मूक–बधिर के 30 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

VIII उपकरण

मूक–बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का मापन करने के लिये बेल द्वारा निर्मित समायोजन का श्रीमती ललीता भार्मा द्वारा किया गया भारतीय अनुकूलन का प्रयोग किया गया।

सारिणी 1
मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों के मध्यमानों का विवरण

समूह	गृह समायोजन	सामाजिक समायोजन	संवेगात्मक समायोजन	स्वास्थ्य समायोजन	कुल समायोजन
बालक	11	9	11	10	42.33
बालिका	11	12	12	10	44.66

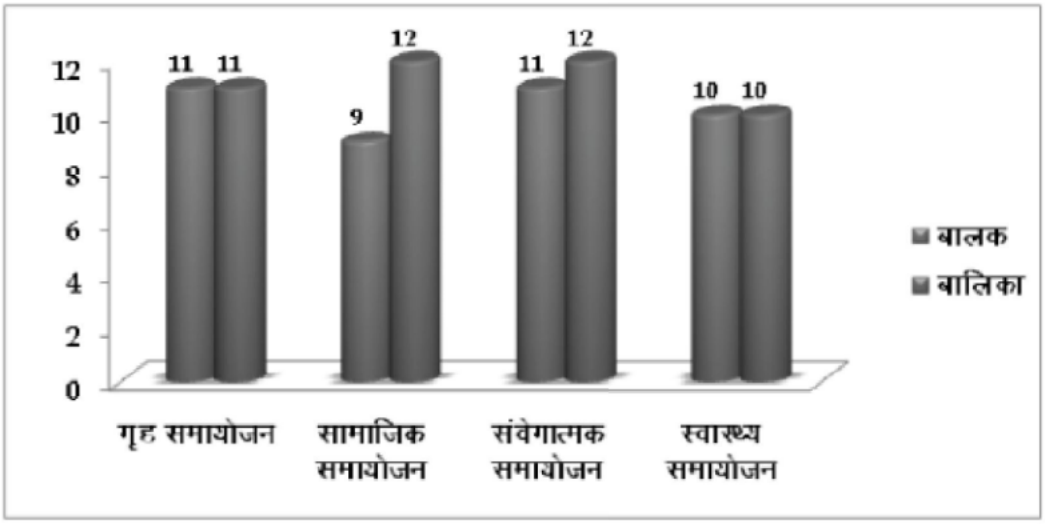

ग्राफ 1 मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों को ग्राफ द्वारा विवरण।

सारिणी–2
समायोजन परीक्षण से प्राप्त प्रवत्तों का विश्लेषण टी–परीक्षण का सारांश–

समूह	N	M	SD	t-value
बालक	15	42.33	5.65	1.129
बालिका	15	44.66	5.65	

समायोजन क्षेत्र में t-test का मान 1.129 पाया गया।

मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों के मध्यमान प्रभावित विचलन (SD) तथा t का मान का सारांश

सारिणी–3
गृह समायोजन

समूह	N	M	SD	t-value
बालक	15	11	1.66	0.00
बालिका	15	11	2.78	

सारिणी–4
सामाजिक समायोजन

समूह	N	M	SD	t-value
बालक	15	9	2.69	3.08
बालिका	15	12	2.32	

सारिणी–5
संवेगात्मक समायोजन

समूह	N	M	SD	t-value
बालक	15	12	1.46	1.59
बालिका	15	12	1.96	

सारिणी–6
स्वास्थ्य समायोजन

समूह	N	M	SD	t-value
बालक	15	10	2.40	0.00
बालिका	15	10	1.98	

IX निष्कर्ष

मूक–बधिर बालक–बालिकाओं के कुल समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

X शैक्षिक निहितार्थ

(क) प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से मूक–बधिर विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(ख) समायोजन के विभिन्न पक्षों गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, संवेगात्मक समायोजन और सामाजिक समायोजन चारों पक्षों की पहचान की जा सकती है।

(ग) प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से समायोजन में आने वाली समस्याओं को पहचान कर उन्हें दूर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] अग्रवाल, एन. दुबे (2006) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, राधा प्रकाशन मंदिर आगरा।

[2] बायती, जमनालाल, (1996) बाल की समस्याएँ प्रभाव प्रकाशन नई दिल्ली।

[3] दीसाझ, एन.एल. (2004) समस्या बालक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।

[4] गेरिट, ई.एल. (1945) मनोविज्ञान में सांख्यिकी विधियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगर।

[5] कौशिक, ब.ना. (1977) विकलांग शिक्षा सिंधु, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण, जयपुर।

[6] पाठक पी.डी. (1990) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[7] सिड़ाना, अशोक कुमार (2003) विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।

[8] वर्मा, रामपाल, सिंह (1970) शैक्षिक मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।